डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप सत्र 12, पाप का बाइबिल विवरण जारी, पतन, मसीह और पाप

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और मानवता और पाप के सिद्धांतों पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 12 है, पाप का बाइबिल विवरण जारी, पतन, मसीह और पाप।

हम पाप के सिद्धांत का अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

आइए हम प्रभु से मदद मांगें। दयालु पिता, आपके वचन, आपके पवित्र वचन के लिए धन्यवाद। इन विषयों का अध्ययन करते समय, हम अपनी खुद की अपवित्रता का सामना करते हैं। हमें आपके साथ चलने, आपसे और अधिक प्रेम करने, अनुग्रह में बढ़ने और मसीह के ज्ञान में बढ़ने की कृपा दें, जिसके नाम पर हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

हम जॉन महोनी के पाप के बहुत ही मददगार बाइबिल वर्णन को समाप्त कर रहे हैं। हमने अभी कहा कि पाप धोखेबाज है। हमने इसे दोनों नियमों में देखा। महोनी के लिए पाप का अंतिम वर्णन यह है।

पाप की मानव इतिहास में एक निश्चित शुरुआत थी और अंततः उसे पराजित किया जाएगा। बाइबिल की कहानी तीन ऐतिहासिक घटनाओं से उत्पन्न होती है: ब्रह्मांड का निर्माण, पाप का प्रवेश, और मसीह द्वारा किया गया उद्धार। यह तीन भागों में एक नाटक है: सुखद शुरुआत, दुखद विद्रोह, और शानदार समापन।

कहानी एक ऐसी दुनिया बनाने की योजना से शुरू होती है जो सृष्टिकर्ता के आश्चर्य और महिमा को दर्शाती है, प्रकाशितवाक्य 4:11, जहाँ परमेश्वर की स्तुति की जाती है। हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू महिमा, आदर और सामर्थ्य पाने के योग्य है, क्योंकि तूने ही सब कुछ बनाया है, और तेरी ही इच्छा से वे अस्तित्व में आए और बनाए गए। जो कुछ भी उसने बनाया है वह अच्छा है।

उस सृष्टि के मुकुट पर उसकी अनन्य छवि है और उसे बहुत अच्छा घोषित किया गया है, उत्पत्ति 1:31। इस रमणीय दुनिया में, परमेश्वर अपनी सृष्टि के साथ पूर्ण सामंजस्य में संवाद करता है। पाप की पहली उपस्थिति के साथ, पहले आत्मिक प्राणियों के बीच जिन्हें परमेश्वर की सेवा करने के लिए बनाया गया है, और फिर उसके व्यक्तिगत छवि धारकों के बीच, ऐसा लगता है कि सृष्टिकर्ता ने अपनी सृष्टि पर नियंत्रण खो दिया है। हालाँकि, अदन में पहले जोड़े के पाप के साथ, वह तुरंत पुनर्प्राप्ति परियोजना शुरू करता है।

उसने जो कुछ भी बनाया है, उसे नष्ट करने के बजाय, वह दुनिया और अपने द्वारा बनाए गए लोगों को पुनः प्राप्त करने की धीमी, थकाऊ प्रक्रिया शुरू करता है। अंतिम पुनर्प्राप्ति की ओर

प्रत्येक नया कदम उसकी व्यक्तिगत भागीदारी को दर्शाता है। व्यक्तिगत बलिदान और प्रेम के एक अद्भुत कार्य में, वह अपने बेटे को पापियों की गिरती हुई दुनिया में भेजता है।

अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से, सृष्टिकर्ता अपने सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। उसकी महिमा शानदार ढंग से प्रदर्शित होती है, और उसके लोग शरीर, संसार और शैतान की भयानक दासता से मुक्त हो जाते हैं। अंत में, विजयी प्रभु एक विजयी राजा के रूप में लौटता है और, अपनी सृष्टि से विस्मय के अंतिम प्रदर्शन में।

यह कितनी अविश्वसनीय कहानी है। मानव इतिहास का पूरा विस्तार उसकी कहानी है। यूहन्ना प्रकाशितवाक्य 21:1 से 4 में लिखता है, "फिर मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी, क्योंकि पहला स्वर्ग और पहली पृथ्वी जाती रही, और अब कोई समुद्र नहीं रहा।"

फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह अपने पति के लिए सजी हुई दुल्हन के समान थी। फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना, देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उनके बीच डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे। और परमेश्वर आप उनके बीच में रहेगा, और उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा।

और अब कोई मृत्यु नहीं होगी, अब कोई शोक या रोना या दर्द नहीं होगा, क्योंकि पहली चीजें बीत चुकी हैं। यहीं पर माहोनी का पाप का वर्णन समाप्त होता है। मैं पाप के सिद्धांत के बारे में उनके परिचय को जारी रखना चाहता हूँ क्योंकि यह मुझे बहुत मददगार लगता है।

वह इसे पतन-पूर्व प्रतिमान कहते हैं। परंपरागत रूप से, पाप के सार को उजागर करने की रणनीति में शास्त्रों से पाप के बारे में जो कुछ भी हम जानते हैं, साथ ही पतन-पूर्व आदम पर हमारे अपने पतन-पश्चात के अनुभव को प्रक्षेपित करना शामिल है। हमारे लिए, सभी पाप एक अविश्वासी, अभिमानी हृदय से उत्पन्न होते हैं।

धर्मशास्त्रियों द्वारा अभिमान और अविश्वास के अलावा अपनाए गए अन्य विकल्पों में चिंता, स्वार्थ, कामुकता, आलस्य और झूठ शामिल हैं। लेकिन क्या अविश्वास या अभिमान आदम के पाप की जड़ है? हम निश्चित रूप से इस बात पर विवाद नहीं कर रहे हैं कि अविश्वास और अभिमान ने प्रलोभन में भूमिका निभाई, लेकिन सवाल उठाने, मानवीय संदेह को दर्शाने और अपने तरीके से आगे बढ़ने की ओर ले जाने के लिए, मानवीय अभिमान, आदम के लिए तब तक पाप नहीं था जब तक कि उसने फल खाकर उन पर काम नहीं किया। आदम का पाप परमेश्वर के न्याय के रूप में मृत्यु के आक्रमण के साथ-साथ था, उत्पत्ति 2:17। जिस दिन तुम इसे खाओगे, निषिद्ध फल, तुम मर जाओगे।

उदाहरण के लिए, ईडन में प्रलोभन के दौरान, ऑगस्टीन ने माना कि आदम घमंडी हो गया और अपने अविश्वास के आगे झुक गया, जिसके परिणामस्वरूप उसने निषिद्ध फल खा लिया। इसका तात्पर्य यह है कि आदम ने अविश्वास की पतन-पश्चात अवस्था में प्रवेश किया, जो पापपूर्ण है और फल खाने से पहले ही भ्रष्ट हो गया था। लेकिन आदम के लिए, अविश्वास एक विकल्प था।

उसने सृष्टिकर्ता के सीधे आदेश की अवज्ञा करके विश्वास जारी न रखने का फैसला किया। आदम का विद्रोही कार्य सभी पापों की जड़ है, न कि उसका अभिमान। मसीह के पापरहित मानवीय चरित्र के परिप्रेक्ष्य से देखने पर आदम का संदर्भ स्पष्ट हो जाता है।

इस संबंध में, यीशु पतन-पूर्व मानवता की अभिव्यक्ति है और हमें पतन-पूर्व आदम की नैतिक ईमानदारी के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। अपने सांसारिक जीवन के दौरान यीशु के इरादे और व्यवहार उसके पापहीन स्वभाव के अनुरूप थे। आदम के बारे में भी यही सच है।

यह स्पष्ट है कि आदम पाप रहित रहा, यहाँ तक कि उसने फल खाने का विचार भी किया। वह तभी पापी बना जब उसने वाचा के प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करने का चुनाव किया। जिस प्रलोभन का उसने सामना किया, उसने उसे संप्रभु सृष्टिकर्ता से स्वतंत्र होकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया, लेकिन इसलिए नहीं कि वह पहले से ही घमंड और अविश्वास से भ्रष्ट था।

यदि ऐसा है, तो वह वास्तव में पाप करने से पहले ही पापी हो गया होगा। उठाया गया मुद्दा मूल सृष्टि की अच्छाई के साथ-साथ आदम की मूल धार्मिकता है। यदि आदम को अपरिपक्व बनाया गया था, जैसा कि इरेनियस ने माना था, या नैतिक रूप से तटस्थ था, जैसा कि आर्मिनियन कहते हैं, तो उसकी मूल धार्मिकता को चुनौती दी जाती है।

ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर ही पाप का असली लेखक है क्योंकि आदम में धार्मिक, पापरहित स्वभाव के संदर्भ में धार्मिकता का अनुसरण करने की क्षमता का अभाव था। रणनीतिक रूप से, पतन-पूर्व ग्रिड या क्राइस्टोलॉजिकल परिप्रेक्ष्य हमारे लिए प्रलोभन और पाप के बारे में आदम के दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। जाहिर है, शैतान ने पहले जोड़े के पापरहित मानवीय सीमाओं के क्षेत्रों को आकर्षित किया, जैसे कि नई चीजों को सीखने और अनुभव करने की उनकी इच्छा।

नैतिक ईमानदारी के लिए सर्वज्ञता की आवश्यकता नहीं होती, शायद उनके अधिकार की भावना की भी आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि सृष्टि में उनकी छवि-असर वाली स्थिति और सभी विकल्पों के बीच चुनाव करने की विशेष क्षमता होती है। बाकी सृष्टि के संबंध में आदम की एक अनूठी स्थिति थी। तब शैतान की योजना उन्हें सृष्टिकर्ता से सवाल करने के लिए उकसाने की थी, खासकर एक निषिद्ध फल के प्रकाश में।

सृष्टिकर्ता ने एक सीमा खींची थी। इस प्रकार, शैतान का इरादा जोड़े को यह महसूस कराना था कि सृष्टिकर्ता उनसे कुछ अच्छा छिपा रहा है। संभावना यह थी कि इस फल में सभी ज्ञान की कुंजी निहित थी, जिसे प्राप्त करने के लिए उन्हें निश्चित रूप से बनाया गया था, साथ ही यह उनकी अपनी दिव्यता का द्वार भी था।

आदम के सामने एक विकल्प था कि वह सृष्टिकर्ता की आज्ञा माने या फिर ईश्वर के निषेध की अवहेलना करे और अपनी मर्जी से काम करे। शायद, जैसा कि सीएस लुईस बताते हैं, आदम और हव्वा ब्रह्मांड में कोई ऐसा कोना चाहते थे, जिसके बारे में वे ईश्वर से कह सकें, यह हमारा मामला है, आपका नहीं, लेकिन ऐसा कोई कोना नहीं है। वे संज्ञा बनना चाहते थे, लेकिन वे थे और हमेशा के लिए केवल विशेषण ही रहेंगे।

सी.एस. लुईस, *द प्रॉब्लम ऑफ़ पेन*, 1962. हम केवल इतना निश्चित रूप से कह सकते हैं कि आदम के लिए पाप विद्रोह का कार्य था, वह फल खाना जिसे खाने के लिए परमेश्वर ने उसे मना किया था। उसने परमेश्वर द्वारा निर्धारित नहीं किया गया मार्ग चुना, और उस कार्य में विचलन ने उसके स्वभाव में पूर्ण विचलन उत्पन्न किया।

हो सकता है कि वह ईश्वर से स्वतंत्र होकर ब्रह्मांड का कोई कोना चाहता हो, लेकिन हमें इस बारे में कोई निश्चितता नहीं है। हम अभी भी इस सवाल पर विचार कर रहे हैं कि एक पापरहित प्राणी ने पाप क्यों चुना। मसीह के पापरहित जीवन से आदम की पतन-पूर्व अवस्था को मापना शायद इस दृष्टिकोण को शुरू में अजीब लगे।

मसीह को एक ग्रिड के रूप में लागू करने से पाप के बारे में जो हम पहले से जानते हैं, उसमें कोई खास बदलाव नहीं आता, लेकिन यह निश्चित रूप से प्रलोभन के दौरान आदम की आंतरिक स्थिति को स्पष्ट करता है। इस तरह, पाप के सार को एक आवश्यक वस्तुनिष्ठता दी गई है। यहाँ इसका अवलोकन दिया गया है।

आदम का पाप परमेश्वर की घोषित आज्ञा के विरुद्ध विद्रोह का कार्य था, जो एक विशिष्ट संदर्भ में किया गया था जिसमें एक अंतिम विकल्प बनाया जाना था, एक ऐसा विकल्प जिसके विनाशकारी परिणाम थे। यह विकल्प एक धर्मी और इसलिए योग्य प्रतिनिधि द्वारा किया गया था जिसके लिए अवज्ञा उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का कार्य था और उसकी नैतिक दिशा का पूर्ण विरोधाभास था। इस प्रस्ताव की कई महत्वपूर्ण विशेषताओं पर कुछ टिप्पणी की आवश्यकता है।

सबसे पहले, सभी पाप विद्रोह के कार्य से शुरू होते हैं। इस अवज्ञा का मूल आधार एक सकारात्मक और एक नकारात्मक घटक की उपस्थिति है। सकारात्मक घटक व्यक्तिगत अधिकारों का दावा है, और नकारात्मक घटक उस व्यक्ति के अधिकारों को अस्वीकार करना या उखाड़ फेंकना है जिसने आदेश दिया था।

सभी अवज्ञा में ये दो विशेषताएं होती हैं। हमारी प्रस्तावित परिभाषा का एक और पहलू एक घोषित आदेश का अस्तित्व है। जाहिर है, आदेश का एक प्राधिकारी व्यक्ति होता है जिसने इसे जारी किया होता है।

इसके अलावा, जिसे आज्ञा दी गई थी, वह इसे समझता था और उसके पास आज्ञा मानने या न मानने का स्पष्ट विकल्प था। उसके स्वभाव की दिशा धार्मिकता की ओर थी। तीसरा, पाप का सार केवल धार्मिकता से अधार्मिकता की ओर जाने में ही देखा जा सकता है।

इसके लिए परीक्षण के लिए एक विशिष्ट संदर्भ और एक नियुक्त प्रतिनिधि की आवश्यकता होती है जो पूरी तरह से धर्मी हो। अंत में, जैसे कि आज्ञाकारिता के विनाशकारी प्रभाव होते हैं। गहन रूप से, कुल भ्रष्टता।

व्यापक रूप से, सार्वभौमिक। और अनंत काल तक, बिना रुके, नरक में अंतहीन सज़ा। वाचा का संदर्भ।

ईश्वरीय-मानव संबंध की सबसे प्रमुख विशेषताओं में से एक है इसका वाचा संबंधी संदर्भ। ईश्वर वाचा के माध्यम से सभी लोगों से संबंध रखता है। बाइबिल की वाचाओं का उद्घाटन नियुक्त मध्यस्थों या प्रतिनिधियों के माध्यम से किया गया था।

नूह, अब्राहम, मूसा। नैतिक परिवीक्षा के मामले में, प्रभु ने दो प्रतिनिधियों को नियुक्त किया। धर्मशास्त्रीय रूप से कहें तो, दो आदम मानव समाज की शुरुआत और अंत का गठन करते हैं। मार्गुराइट शूस्टर, *द फॉल एंड सिन*। हम पापी के रूप में क्या बन गए हैं।

दरअसल, पौलुस ने रोमियों 5:12 और उसके बाद के अध्यायों में स्पष्ट रूप से प्रतिनिधित्व का संकेत दिया है। मैं पूरी तरह से सहमत हूँ। यीशु की प्रतिनिधि के रूप में भूमिका की याद दिलाने वाले पल उसके पूरे मंत्रालय में आते हैं।

अपने बपतिस्मा के समय, यीशु ने उन लोगों के साथ अपनी पहचान बनाई जिन्हें वह छुड़ाने आया था। मत्ती 3:15. यीशु की नैतिक परीक्षा आज्ञाकारिता सीखना था।

इब्रानियों 5:8. समझदार महायाजक बनने के लिए। इब्रानियों 2:17, 18. उसकी पूरी आज्ञाकारिता जिसे सक्रिय आज्ञाकारिता कहा जाता है, ने नैतिक व्यवस्था की सभी माँगों को पूरा किया।

कूस पर मसीह के प्रतिस्थापन कार्य, जिसे निष्क्रिय आज्ञाकारिता कहा जाता है, को पौलुस ने प्रतिनिधिक के रूप में पहचाना है। रोमियों 5:18, 19. फिर से, मैं सहमत हूँ।

यहाँ तक कि उसका पुण्यपूर्ण पुनरुत्थान, यहाँ तक कि उसका, क्षमा करें, विजयी पुनरुत्थान, विश्वासियों में साकार होता है क्योंकि वह हमारा प्रतिनिधित्व करता है। 1 कुरिन्थियों 15:22। ये दोनों प्रतिनिधि अद्वितीय रूप से स्थित थे और कई मायनों में एक दूसरे के समानांतर थे।

वे अभिव्यक्ति के उच्चतम अर्थ में छवि वाहक थे। दोनों मानवता के लिए परमेश्वर के डिजाइन के बिल्कुल सही प्रतिबिंब थे। वे चरित्र में भी धर्मी थे और उनमें पाप करने की कोई प्रवृत्ति नहीं थी।

दूसरा, आदम और मसीह ने सृष्टिकर्ता पर पूरी तरह से निर्भरता में मानवता का अनुभव किया। वे आध्यात्मिक रूप से जीवित थे और केवल परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जीते थे। पॉल के अनुसार, परमेश्वर का मूल डिजाइन अच्छे कार्यों का उत्पादन था।

इफिसियों 2, 10. वास्तव में, मुझे लगता है कि यह सृष्टि की बात नहीं बल्कि नए पुनर्निर्माण की बात कर सकता है, जैसा कि मैंने पहले कहा था, और फिर भी मुद्दा कायम है। निश्चित रूप से, परमेश्वर चाहता था कि आदम और हव्वा अच्छे काम करें।

इसके बाद, वाचा के प्रतिनिधि दोनों ही पोज नॉन पेकेरे, पाप न करने में सक्षम और पोज पेकेरे, पाप करने में सक्षम थे। वे एकमात्र मनुष्य हैं जो पाप के संबंध में उस अद्वितीय स्थिति में खड़े थे। पाप न करने में सक्षम, पाप करने में सक्षम।

बेशक, यह भाषा सेंट ऑगस्टीन से आई है। अंत में, दोनों प्रतिनिधियों ने परिवीक्षा नामक परीक्षण का अनुभव किया। परीक्षण का एजेंट, लक्ष्य और सार एक ही था।

एजेंट, शैतान, लक्ष्य और परीक्षण का सार एक ही था। हालाँकि, परीक्षण के परिणाम बहुत अलग थे। इस संबंध में, आदम परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके परीक्षण में असफल हो गया।

उसने एक बार गलत चुनाव किया। दूसरी ओर, मसीह ने जीवन भर आज्ञाकारिता बनाए रखी। उसने हमेशा धार्मिकता को चुना।

अन्य अंतर भी हैं। उदाहरण के लिए, आदम का भौतिक संदर्भ प्राचीन था। मसीह एक बहुत ही पतित दुनिया में आया।

आदम के पास अपने निर्णयों को प्रभावित करने के लिए कोई धार्मिक परंपरा या इतिहास नहीं था। मसीह कठोर धार्मिक जांच के समय में आया था। आदम के पास एक अपरीक्षित, धार्मिक चरित्र था।

मसीह के पास भी मनुष्य के रूप में एक अपरीक्षित धार्मिक चरित्र था, लेकिन उसके पास परमेश्वर का धार्मिक चरित्र था, जो कि दिखावा नहीं था। पाप करने में असमर्थ, साथ ही इच्छाशक्ति भी। यीशु, आखिरकार, देहधारी परमेश्वर थे। वह पवित्र थे, और परमेश्वर प्रलोभन से भी परे थे, लेकिन उन्हें प्रलोभन इसलिए दिया गया क्योंकि वह पूरी तरह से मनुष्य थे।

मैं सहमत हूँ। मसीह के दो स्वभावों ने उसे वास्तविक प्रलोभन का सामना करने की क्षमता के साथ-साथ उसे अनुभव करने की असीम क्षमता भी प्रदान की। पाप के सार की खोज करने के लिए वह हमारा प्राथमिक कारण है।

पाप के सार को जानने का हमारा मुख्य कारण यही है। मसीह के लेंस के माध्यम से। लेंस का अनुप्रयोग।

शास्त्र से तीन बातें स्पष्ट हैं। मसीह पूरी तरह से मनुष्य थे। वे पूरी तरह से पापरहित थे, और वे ईश्वर के अवतार थे।

लेंस की ये तीन विशेषताएँ उसे परीक्षण के लिए योग्य बनाती हैं और उसे परीक्षण के पूर्ण माप का अनुभव करने की अनुमति देती हैं। उसने पाप का सामना ठीक वैसे ही किया जैसा आदम ने किया था, लेकिन बहुत अधिक दांव पर लगा हुआ था और बहुत अधिक तीव्रता के साथ। असफलता ने पिता की महिमा करने और पापियों को छुड़ाने के उसके मिशन को खतरे में डाल दिया होगा, इस प्रकार सभी मनुष्यों पर परमेश्वर के क्रोध को उजागर किया होगा और उनके लिए मुक्ति की कोई उम्मीद नहीं होगी।

मसीह अपनी इच्छा से पूरी तरह से मनुष्य थे। वे स्वभाव से और अपनी पसंद से पाप रहित भी थे। उनकी इच्छा के प्रति उनके मानव जीवन के बलिदान का निरंतर समर्पण ही हमारे उद्धार का आधार है।

इब्रानियों 10:10. सबसे पहले, मसीह की मानवता ने उसे परीक्षण की क्षमता प्रदान की। अवतार के माध्यम से, मसीह ने मानवीय अनुभव की सभी सीमाओं का अनुभव किया। वह समय और स्थान द्वारा शारीरिक रूप से सीमित था, परिपक्वता की सरल प्रक्रिया द्वारा, इब्रानियों 2:40, उसके आस-पास की भौतिक दुनिया पर मानवीय निर्भरता, भूख, प्यास, थकान, चिंता, भय, रोना, और सामान्य सर्दी से लेकर दांतों की सड़न या हाथों से काम करने से छाले पड़ने जैसी बीमारी या चोट के खतरे से।

यीशु मानसिक रूप से सीमित थे। उन्हें सीखना पड़ा, लूका 2:40 और 52 और अक्सर जानकारी माँगते थे, यूहन्ना 11:34। हालाँकि उन्हें अंतिम समय की घटनाओं के बारे में बहुत स्पष्टता थी, उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें अपनी वापसी का समय नहीं पता था, मत्ती 24:36। यीशु मनोवैज्ञानिक रूप से भी सीमित थे। उन्होंने अपने दुश्मन की घृणा और अस्वीकृति से उत्पन्न भावनाओं को सहन किया, साथ ही उन लोगों की अविश्वास और असहाय स्थिति को भी सहन किया जिन्हें वे बचाने आए थे।

अंत में, वह अपनी मानवीय आध्यात्मिकता के भीतर सीमित था। उसने कई रातें प्रार्थना और आराधना में बिताई, मरकुस 1:35, मत्ती 14:23, और इस बात पर दुखी हुआ कि वह शिष्यों के साथ कुछ गहरी आध्यात्मिक सच्चाइयों को साझा करने में असमर्थ था, यूहन्ना 16:12। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र उसके कई परीक्षणों के दौरान सामने आया। मसीह भी परमेश्वर की छवि की सबसे पूर्ण और स्पष्ट अभिव्यक्ति था।

आयामी रूप से देखने पर, मूल छवि के तीन घटक होते हैं। पहला, संरचनात्मक पहलू तर्कसंगतता, नैतिकता, इच्छाशक्ति, भावना, रचनात्मकता और आध्यात्मिकता से बना होता है। फिल ह्यूजेस, सच्ची छवि।

यीशु ने इनमें से प्रत्येक घटक को प्रतिबिम्बित किया और उन्हें पूर्ण संतुलन में रखा। संरचना में, हम मसीह के समानांतर हैं, यद्यपि हम गिर रहे हैं। अगला है छवि की कार्यात्मक क्षमता।

यह क्रियाशील केंद्र है। पापी आध्यात्मिक रूप से मृत हैं, जो हमारे अपराधों और पापों में परिलक्षित होता है, इफिसियों 2:1। परमेश्वर की इच्छा करने और धार्मिकता में उसका अनुसरण करने की मूल क्षमता पतन में खो गई थी। हमारे पास कोई आकस्मिक धार्मिकता नहीं है जिसके माध्यम से हमारे भीतर परमेश्वर की छवि निर्देशित होती है।

हालाँकि, यीशु धर्मी थे, और उनमें छवि का संचालन पाप से घृणा और पवित्रता के प्रति प्रेम से प्रेरित और यहाँ तक कि मजबूर था। आयामी रूप से, यह छवि का ईश्वर-उन्मुखीकरण था। तीसरा, छवि ने मानवजाति को सृजित व्यवस्था पर प्रभुत्व प्रदान किया।

यीशु ने इस क्षेत्र का प्रयोग एक उग्र तूफान को रोकने, पानी पर चलने और रोटी और मछली को बढ़ाने में किया। यूजीन मेरिल ने मछली के मुंह में यीशु के मंदिर कर के दिलचस्प विवरण को भी नोट किया, मैथ्यू 17:27। उन्होंने कहा, उद्धरण, हालाँकि फिर से कोई यहां चमत्कार का अनुरोध कर सकता है, इसे पापहीन व्यक्ति के प्राकृतिक परिणाम के रूप में भी अच्छी तरह से समझाया

जा सकता है, कैपिटल एम, मूल सृजन वाचा के विशेषाधिकार का आह्वान करता है जिसमें उसे समुद्र की मछलियों पर प्रभुत्व प्राप्त करना था, उद्धरण बंद करें। मैं चमत्कार के लिए वोट दूंगा, लेकिन यह एक दिलचस्प अवधारणा है।

यूजीन मेरिल, पुराने नियम के बाइबिल धर्मशास्त्र में पेंटाटेच का धर्मशास्त्र। यीशु न केवल पूरी तरह से मानव थे, बल्कि पाप रहित भी थे और इसलिए, पूरी तरह से अद्वितीय थे। अपने सभी विचारों, दृष्टिकोणों, उद्देश्यों, शब्दों और कार्यों में, वह एक पवित्र ईश्वर के सामने दोष रहित थे, उद्धरण, और जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है।

उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है, क्योंकि मैं हमेशा वही करता हूँ जो उसे अच्छा लगता है, यूहन्ना 8:29। उसने अपने समय के धार्मिक अभिजात वर्ग को चुनौती दी, "तुम में से कौन मुझे पाप का दोषी ठहराता है?" यूहन्ना 8:46। मैंने अपने छात्रों और खुद से कहा है, अपने विरोधियों से ऐसा मत कहो। यह बहुत बुरा विचार है। मानवीय सीमाओं और चुनौतियों के संदर्भ में भी, यीशु ने पिता का सम्मान करने और उन्हें बड़ा करने के लिए पूरी तरह से जीवन जिया।

उनके अनुयायियों ने उनके धार्मिक चरित्र पर स्पष्ट रूप से जोर दिया। पतरस, जो उन्हें सबसे अच्छी तरह से जानता था, ने घोषणा की कि यीशु ने कोई पाप नहीं किया, न ही उनके मुँह से कोई छल की बात निकली, 1 पतरस 2:22। पापहीन, एक इंसान के लिए यह जितना अविश्वसनीय लगता है, यीशु को एक उदाहरण कहा जाता है, लेखन या चित्र बनाने में इस्तेमाल किया जाने वाला एक ट्रेसिंग मॉडल शब्द है, हापोग्रामेटोस, उद्धरण, क्योंकि आपको इस उद्देश्य के लिए बुलाया गया है, क्योंकि मसीह ने भी आपके लिए दुख उठाया, आपको एक उदाहरण दे गया है, ताकि आप उसके नक्शे-कदम पर चलें, क्योंकि उसके मुँह से कोई छल न निकला था, और जब वह गाली खा रहा था, तो उसने बदले में गाली नहीं दी। पीड़ित होने के दौरान, उसने कोई धमकी नहीं दी, बल्कि खुद को उसके हाथ में सौंपता रहा, जो सही न्याय करता है, 1 पतरस 2:21-23

पॉल और जॉन ने भी उनके पापहीन चरित्र की पुष्टि की: "जो पाप से अज्ञात था, उसे उसने हमारे लिए पाप बना दिया, ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ," 2 कुरिन्थियों 5:21, और, उद्धृत करें, उसमें कोई पाप नहीं है, 1 यूहन्ना 3.5। क्राइस्टोलॉजिकल लेंस की तीसरी विशेषता मसीह की दिव्य प्रकृति थी। यीशु दो अलग-अलग स्वभाव वाले मनुष्य थे। मसीह के व्यक्तित्व के हर कार्य या विचार में एक मानवीय स्वभाव और एक दिव्य स्वभाव शामिल था।

दोनों गुण उसके मानवीय अस्तित्व के दौरान स्पष्ट थे और अनंत काल तक बरकरार रहे। दोनों गुणों के होने के कारण वह हमारे महायाजक के रूप में अद्वितीय रूप से योग्य था, जिसने पापों के प्रायश्चित्त के रूप में खुद को अर्पित किया। मानवीय स्वभाव ने उसे हमारे लिए मरने की क्षमता दी, और ईश्वरीय स्वभाव ने हमारे लिए बलिदान को प्रभावी बनाया।

उनकी सांसारिक सेवकाई के अन्य पहलुओं के लिए दो स्वभावों की आवश्यकता थी। पिता के एक अद्वितीय और अंतिम रहस्योद्घाटन के रूप में उनकी शिक्षण सेवकाई मानवीय संदर्भ और दिव्य प्राधिकरण पर निर्भर थी। मनुष्य के पुत्र के रूप में परमेश्वर के राज्य के संबंध में उनके अधिकार और राजत्व के दावे दोनों स्वभावों पर निर्भर करते हैं।

उनके प्रलोभन के संदर्भ में, हम मसीह के ईश्वरत्व का परिचय देने में हिचकिचाते हैं। एक ओर, शास्त्रों में यह घोषणा की गई है कि परमेश्वर पाप से परीक्षा में नहीं आता, याकूब 1:13। दूसरी ओर, हम जानते हैं कि यीशु ने अपने पूरे जीवन में जिन प्रलोभनों का सामना किया, वे वास्तविक थे। तो, क्या उसने केवल एक इंसान के रूप में अपनी चुनौतियों का अनुभव किया? प्रलोभन को मानव स्वभाव तक सीमित रखना अधिक आरामदायक लगता है।

लेकिन यह असंभव है क्योंकि वह दो स्वभाव वाला एक व्यक्ति है। लेकिन वास्तविकता यह है कि अवतार के माध्यम से, परमेश्वर ने खुद को हमारी मानवता के साथ जोड़ लिया, यहाँ तक कि उसके पतित स्वभाव में भी। अवतार ने दिव्य स्वभाव को वह माध्यम प्रदान किया जिसके माध्यम से उसने कुछ चीजों का अनुभव किया, जैसे कि दुख, मृत्यु और यहाँ तक कि प्रलोभन भी।

मानव स्वभाव नैतिक रूप से और हर तरह से परिपक्व होता है। मनुष्य के लिए नैतिक परिपक्वता नैतिक परीक्षण पर निर्भर है। मसीह के दिव्य और मानवीय स्वभाव ने इस प्रक्रिया में प्रत्येक चरण में सहयोग किया है।

वास्तव में, अपने पूरे जीवन में, यीशु ने इस परीक्षण की तीव्रता का सामना किया, जिसका समापन क्रूस पर हुआ। इस प्रकार, उसे लगातार ऐसे विकल्पों का सामना करना पड़ रहा था जो विकास को बढ़ावा देते थे। लेकिन परमेश्वर के रूप में, इन विकल्पों ने बहुत गहरा अर्थ ग्रहण किया।

परमपद उनके द्वारा चुने गए हर चुनाव की विशेषता बन गया। पिता की इच्छा का पालन करना उनका विकल्प था, और पिता का सम्मान उनका लक्ष्य था। नैतिक खाई का सामना करना।

महोनी ग्रैंड कैन्यन में होने और एक अद्भुत खाई को देखने के बारे में बात करते हैं। शायद एक नया दृष्टिकोण मदद करेगा। माफ़ करना।

ग्रैंड कैन्यन के बारे में बात करने के बाद, लेकिन हमारे पाप और ईश्वर और हमारे बीच उसके द्वारा बनाई गई खाई के बारे में क्या? पाप की प्रकृति में ऐसा क्या है जो इतनी दूरी पैदा करता है? क्या यह अपमानित व्यक्ति की अनंत नैतिक पूर्णता है? या यह विरोधाभास है कि पाप उसके सामने है? शायद एक नया दृष्टिकोण मदद करेगा। हम मसीह की मानवता को अपने ग्रिड के रूप में उपयोग करते हुए इस मुद्दे पर विचार करेंगे। चूंकि यीशु के पास एक पापहीन मानव स्वभाव था जो एक पूर्ण पवित्र ईश्वरीय स्वभाव से जुड़ा हुआ था, तो उसके लिए पाप क्या होता? मुझे लगता है कि इस दृष्टिकोण के प्रति तत्काल प्रतिक्रिया संदेह हो सकती है।

स्पष्ट रूप से, मसीह यीशु ने पाप नहीं किया, लेकिन उसे नियमित रूप से इसका सामना करना पड़ा। क्या होगा यदि वह शैतान के सामने झुक गया होता? ऐसा लगता है कि खाई को सबसे अच्छी तरह से ईश्वर के पुत्र के रूप में देखा जा सकता है, जो पिता की इच्छा की अवज्ञा करने और फिर भी ऐसा करने का विकल्प चुनने के प्रलोभन और संभावना का सामना कर रहा है। किसी भी बिंदु पर आज्ञापालन करने में उसकी विफलता समझ से परे और विनाशकारी होती।

लेकिन पाप भी ऐसा ही है। हम पाप की पराकाष्ठा का सामना कर रहे हैं। जंगल से लेकर सेवकाई के लंबे दिनों तक, जिसमें सिर रखने के लिए कोई जगह नहीं थी, गेथसेमेन से लेकर क्रूस तक, उसकी मानवीय इच्छा, अभिलाषाएँ और उद्देश्य पिता के साथ सतत अनुरूपता में लाए गए।

यीशु, एक ईश्वरीय पुत्र के रूप में, उन चीज़ों से आज्ञाकारिता सीखी जो उसने झेली और इस प्रक्रिया में परिपूर्ण बना, इब्रानियों 5:8। जॉन ब्राउन का दावा है कि यह प्रक्रिया सुधार नहीं थी जैसे कि मसीह को अनुशासन की आवश्यकता थी। इसके अलावा, यह मुख्य रूप से इस अर्थ में शैक्षिक नहीं था कि उसे यह सीखने की ज़रूरत थी कि मानवीय पीड़ा कितनी दर्दनाक है, खासकर आज्ञाकारिता के संबंध में। इसके बजाय, सीखी गई आज्ञाकारिता का अर्थ है पीड़ा के अनुभवात्मक ज्ञान को प्राप्त करना और परिणामस्वरूप आज्ञाकारिता की पूर्णता जो उसने क्रूस पर पिता को अर्पित की।

जॉन ब्राउन, प्रेरित पौलुस द्वारा इब्रानियों को लिखे गए पत्र की व्याख्या, एक प्यूरिटन लेखक जिसने कई अच्छी बातें कही, जिनमें से कुछ बातें ऐसी भी हैं, हालाँकि पौलुस ने इब्रानियों को नहीं लिखा था। मसीह की निरंतर परीक्षा से हम क्या सीख सकते हैं जो हमें पाप के सार की खोज में मदद करेगी? पहला कारक वह वाचा है जिसके तहत उसने काम किया। अनुग्रह या छुटकारे की वाचा पिता और पुत्र के बीच शाश्वत व्यवस्था की व्याख्या करने के लिए एक सहायक प्रारूप है जिसके माध्यम से परमेश्वर के लोगों को छुड़ाया जाता है।

पुत्र ने इस वाचा को पूरी तरह अपनाया और पिता द्वारा लगाए गए हर नियम को पूरा करने के लिए जीया। क्रूस इसके केंद्र में है, लेकिन क्रूस की ओर ले जाने वाली उसकी निरंतर आज्ञाकारिता ने उसे हमारे महान महायाजक के पद में प्रवेश करने और पाप के लिए बलिदान के रूप में खुद को प्रस्तुत करने के योग्य बनाया। एक सादृश्य सहायक हो सकता है।

वस्तुतः सभी मानवीय प्रयासों में, नियम गतिविधि को परिभाषित करते हैं। रिश्तों में भी यह सच है। विवाह प्रेम, विश्वास और वफ़ादारी पर आधारित होता है।

संरचना और परिभाषा प्रदान करने के लिए नियमों की आवश्यकता होती है। कार्य के लिए प्रेरणा के रूप में प्रेम को दिशा और उद्देश्य देने के लिए मात्र भावना से अधिक की आवश्यकता होती है। एक पति द्वारा अपनी पत्नी के प्रति अपने प्रेम का इजहार करना जबकि वह उसका शारीरिक शोषण करता है, प्रेम नहीं है।

यीशु ने प्रेम को नियमों से जोड़ा। “ जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं, और वह उन्हें मानता है, वही मुझसे प्रेम रखता है,” यूहन्ना 14:21।

और “यदि कोई मुझसे प्रेम रखता है, तो वह मेरी बात मानेगा,” यूहन्ना 14:23। ऐसे कई अन्य क्षेत्र सूचीबद्ध किए जा सकते हैं जहाँ संबंधपरक नियम लागू होते हैं।

किसी की नौकरी, सेवकाई, स्कूल, नागरिकता, यहाँ तक कि खेल भी। नियम रिश्तों को परिभाषित करते हैं। लेकिन यीशु स्पष्ट रूप से खेल खेलने से कहीं ज़्यादा कर रहे थे।

वह खुद को एक विशिष्ट वाचा सम्बन्ध के अनुरूप ढाल रहा था। इस प्रकार, इस अंतिम संदर्भ में जिसमें परमेश्वर की महिमा और पापियों की भविष्य की स्थिति को ध्यान में रखा गया था, दांव ऊंचे थे और परिणाम अनन्त थे। इस दृष्टिकोण से, वाचा का कोई भी उल्लंघन इसे निरर्थक बनाता है।

पाप, तो, किसी भी वाचा-शून्यकरण कार्य में है। पाप, तो, किसी भी वाचा-शून्यकरण कार्य में है। यीशु की परिवीक्षा में दूसरा कारक स्वयं प्रलोभन है।

मार्क के सुसमाचार के अनुसार, यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा लेने के तुरंत बाद, यीशु ने पिता की पुष्टि सुनी और आत्मा द्वारा जंगल में चले जाने के लिए मजबूर हुआ। मार्क 1:9 से 12. मैथ्यू और ल्यूक हमारे लिए विवरण भरते हैं।

तीन परीक्षणों के माध्यम से, शैतान ने स्पष्ट रूप से यीशु की पहचान पर सवाल उठाया, उसकी इच्छाओं की उलझन का फायदा उठाया और उसके भविष्य को चुनौती दी। रसेल मूर, *टेम्प्टेड एंड ट्राइड, टेम्पटेशन एंड द ट्राइंग ऑफ़ क्राइस्ट*, क्रॉसवे, 2011 की तुलना करें। निश्चित रूप से, यीशु को पिता द्वारा उसके लिए निर्धारित मार्ग से अलग एक मार्ग चुनने के लिए अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया गया था।

लेकिन प्रत्येक मामले में, रोटी, शिखर, राष्ट्र और वैकल्पिक विकल्प अनुग्रह की वाचा का उल्लंघन था और उसके पिता के साथ उसकी वाचा का उल्लंघन था। प्रत्येक चुनौती के केंद्र में परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करने और उसके साथ वाचा तोड़ने की संभावना थी। रोटी के मामले में, उसे अपनी मानवीय भूख के आगे झुकने की चुनौती दी गई, जिससे वह पिता के प्रावधान पर भरोसा करने के बजाय खुद को उसके नियंत्रण में रख सके।

दूसरे परीक्षण में, उसे मंदिर के शिखर पर ले जाया गया और नीचे भीड़ के सामने अपनी असली पहचान दिखाने के लिए कूदने की चुनौती दी गई। लालच व्यक्तिगत पुष्टि या आत्म-मूल्य की बुनियादी मानवीय ज़रूरत थी। शैतान ने बाइबिल के एक वादे का हवाला भी दिया, लेकिन अगर यीशु ने हार मान ली होती, तो वह अपने पिता के अपमान के डिज़ाइन किए गए मार्ग से ऊपर अपने व्यक्तिगत औचित्य को प्राथमिकता देता।

अंत में, शैतान ने उसे सभी राष्ट्रों की झलक दिखाई और उन्हें पूजा के एक सरल कार्य के लिए उसे पेश किया। इस मामले में, शैतान ने उद्धारकर्ता बनने की यीशु की इच्छा का फायदा उठाया। एक बहुत ही सूक्ष्म तरीके से, शैतान परमेश्वर के पुत्र से सम्मान प्राप्त करने और उद्धार के उद्देश्य को विफल करने की कोशिश कर रहा था जिसे पूरा करने के लिए यीशु को भेजा गया था।

प्रत्येक मामले में, मसीह के लिए पाप पिता की इच्छा के विरुद्ध अपनी इच्छा का स्वतंत्र प्रयोग होता जो किसी कार्य के माध्यम से व्यक्त होता। तीसरा कारक यीशु की व्यक्तिगत कार्य करने की स्वतंत्रता है। यीशु के पास वैकल्पिक विकल्प की वास्तविक स्वतंत्रता थी।

परिणामस्वरूप, यीशु के पास अपने पापरहित मानव स्वभाव के अनुरूप कार्य करने या इसके विपरीत कार्य करने की क्षमता थी। केवल दो व्यक्तियों के पास वह विशिष्ट क्षमता थी: मसीह और आदम। दोनों ही मानव इतिहास में अद्वितीय हैं।

दोनों ने एक विशिष्ट दिव्य वाचा के संदर्भ में कार्य किया, और दोनों ने प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया। यही कारण है कि पापियों के उद्धार में मानवीय इच्छा का तत्व महत्वपूर्ण है। इब्रानियों 10:10 में जोर दिया गया है कि यह, उद्धारण, इस इच्छा से, वाचा के भीतर मसीह की स्वेच्छा से आज्ञाकारिता है, कि हम एक बार के लिए यीशु मसीह के शरीर की भेंट के माध्यम से पवित्र हो गए हैं।

इसी इच्छा से हम यीशु मसीह के शरीर को एक बार हमेशा के लिए अर्पित करने के द्वारा पवित्र किये गये हैं। मामले का सार। अवतार के दृष्टिकोण से पाप की प्रकृति के बारे में कई बातें स्पष्ट हो जाती हैं।

इसके साथ ही हम समापन करते हैं। कुछ और पन्ने। सबसे पहले, यह दृष्टिकोण हमारे आरंभिक तर्क का समर्थन करता है कि पाप की अनुपस्थिति ईश्वर के एक विशिष्ट आदेश का उल्लंघन है।

पाप की मुख्य विशेषताएँ परमेश्वर की अवज्ञा करने के चुनाव में दिखाई देती हैं। आदम या मसीह द्वारा आज्ञाकारिता से अवज्ञा की ओर जाने के दो अलग-अलग और विशिष्ट आयाम थे। पहला है आज्ञा और उसे जारी करने वाले को अस्वीकार करना।

इस संबंध में, पाप ईश्वर से मानव स्वतंत्रता की एक सतत घोषणा है। दूसरा आयाम एक स्वतंत्र नैतिक मार्ग निर्धारित करने में व्यक्तिगत अधिकारों का दावा है। यीशु द्वारा अवज्ञा के किसी भी कार्य में ये दो विशेषताएँ होतीं।

पाप तो उपेक्षा और अवज्ञा दोनों है। यह निर्माता के अधिकारों और स्थिति की अवहेलना करता है और निर्माता द्वारा निर्धारित सीमा को पार करके उसकी अवहेलना करता है। यह दृश्य कुछ-कुछ मिट्टी के कुम्हार के विरुद्ध उठने और कुम्हार के अधिकार को हड़पने जैसा है।

रोमियों 9.21. यीशु के क्रूस में, यीशु के मामले में, पाप केवल तभी हुआ होगा जब उसने पिता के उद्देश्य की अवहेलना करते हुए अपने अधिकार पर काम किया हो। प्रलोभन के संदर्भ में, उसके लिए अपनी भूख को संतुष्ट करने की इच्छा करना पाप नहीं था। जब शैतान ने पत्थरों को रोटी में बदलने या उस मामले के लिए किसी अन्य निमंत्रण का प्रस्ताव रखा, तो क्या वह वास्तव में मनुष्य था और रोटी की इच्छा नहीं करता था? या आत्म-सम्मान के लिए भी यही बात थी? या उन लोगों के उद्धार के लिए जिसे वह बचाने आया था? यह केवल कार्य में ही है कि पाप हमारे लिए पाया जाता है और परिभाषित किया जाता है।

दूसरा, पतन के बाद के दृष्टिकोण से, पाप की कई अभिव्यक्तियाँ हैं। दृष्टिकोण, उद्देश्य, विचार, शब्द और कर्म, किए गए और न किए गए, सभी को बाइबल में पाप कहा जाता है। लेकिन आदम के पतन में यीशु के दृष्टिकोण से, वह जड़ जिससे सभी पाप निकलते हैं, वह परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह का एक ऐतिहासिक कार्य है।

इस प्रकार, आदम द्वारा वाचा का उल्लंघन पाप की सभी अभिव्यक्तियों को वाचा का उल्लंघन बनाता है। मेरा बेटा एक स्थानीय कॉलेज में इंटरम्यूरल डायरेक्टर के रूप में काम करता है। उसकी जिम्मेदारियों में बास्केटबॉल और अन्य गतिविधियों के लिए छात्रों द्वारा सुविधाओं के उपयोग की देखरेख करना शामिल है।

हाल ही में उन्होंने परिसर में एक अन्य गतिविधि के कारण खेल सुविधा को बंद कर दिया। कुछ छात्रों ने बास्केटबॉल खेलने का फैसला किया और क्योंकि सुविधाएं बंद थीं, वे अंदर घुस गए। जब मेरा बेटा आया, तो छात्र अच्छे व्यवहार वाले थे, संकाय सुविधा का सम्मान करते हुए, मानो वह पूरे समय वहाँ था।

एक समस्या रह गई। उन्होंने नियमों का उल्लंघन करते हुए घर में घुसकर तोड़फोड़ की। इसलिए, उसके बाद उन्होंने जो कुछ भी किया, वह उल्लंघन था।

वे नियमों के गलत पक्ष पर थे। आदम में हम भी ऐसे ही हैं। हम एक टूटी हुई वाचा के गलत पक्ष पर हैं, और इसलिए, हम जो कुछ भी करते हैं, सोचते हैं, या महसूस करते हैं, वह उस वाचा का निरंतर उल्लंघन है।

और हर वाचा का उल्लंघन पाप है। अंत में, पाप अनिवार्य रूप से एक विरोधाभास है। पतन से पहले के ग्रीड से देखा जाए तो, यीशु को परम असंगति का सामना करना पड़ा।

वह अपने पिता की अवज्ञा करने की इच्छा नहीं रखता था। बल्कि, वह उनसे प्यार करता था और केवल उनका सम्मान करना चाहता था। कल्पना कीजिए कि आप उस व्यक्ति के सामने हैं जिसे आप सबसे ज्यादा प्यार करते हैं और आपके हाथ में एक भरी हुई पिस्तौल है।

फिर कोई आपसे कहता है कि उसे गोली मार दो। यह सोचना ही आपको घिनौना लगता है, लेकिन फिर भी आपके पास विकल्प है। पाप है विरोधाभास का अनुसरण करना।

इसके अलावा, यीशु के लिए पाप करने का कोई तर्कसंगत आधार नहीं था। इससे कुछ भी हासिल नहीं होने वाला था और सब कुछ खोना था, फिर भी यह एक विकल्प था। यीशु की इच्छा या नैतिक दिशा में कोई कमज़ोरी नहीं थी जो पाप की ओर झुकाव पैदा करती।

यूहन्ना 8, इस संसार का राजकुमार आ रहा है, और उसका मुझमें कुछ भी नहीं है। मुझे लगता है कि यह उसी बात के बारे में बोलता है। फिर भी, यीशु के पास चुनने का विशेषाधिकार था।

यह गलत चुनाव पाप है। शुक्र है कि प्रेरित पौलुस हमें खुशखबरी देता है। फिर भी, धार्मिकता के एक काम के ज़रिए सभी लोगों को जीवन का औचित्य मिला।

और एक की आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। रोमियों 5:18 और 19. निष्कर्ष।

नैतिक असफलताओं का एक ऐसा बिंदु होता है जहाँ से वापसी संभव नहीं होती। एक शब्द जो कभी-कभी मुझे परेशान करता है, वह है 'नहीं'। हर बुरे फैसले के साथ, मैं अपने दिमाग में इन शब्दों को गूँजते हुए सुन सकता हूँ।

बस ऐसा मत करो। पाप ऐसा ही है। जल्दबाजी में बोला गया शब्द वापस नहीं लिया जा सकता।

एक क्लिक और आप पोर्न या ऑनलाइन जुए या अवैध प्रिस्क्रिप्शन दवाओं की दुनिया में प्रवेश कर जाते हैं। बस ऐसा न करें। कुछ निर्णयों के परिणाम बहुत विनाशकारी होते हैं।

ट्रिगर खींचना, अपने जीवनसाथी को छोड़ना, अपना कौमार्य खोना, या शायद परमाणु हथियार लॉन्च करने के लिए बटन दबाना। एक बिंदु है जहाँ से वापसी नहीं होती। पाप के मामले में, मसीह ने इसे पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया है।

मसीह स्वर्ग छोड़कर मानव जाति के पहले-बाद के ऐतिहासिक संदर्भ में प्रवेश कर गए। धरती पर उनके द्वारा लिए गए हर निर्णय का एक पहले और बाद का समय था। मसीह ईश्वर की छवि हैं।

वह धार्मिक था। धार्मिकता उसके स्वभाव का अभिन्न अंग थी। इसलिए नहीं कि वह ईश्वर का अवतार था, बल्कि इसलिए कि वह पूरी तरह से मनुष्य था जैसा कि ईश्वर चाहता था कि हम हों।

उसकी धार्मिकता ने उसे परमेश्वर के साथ एक विशेष संबंध प्रदान किया। इसने उसे नैतिक रूप से कार्य करने की स्वतंत्रता भी प्रदान की जो हम पापियों के पास नहीं है। मसीह में परमेश्वर के प्रति अपने मूल स्वभाव को बदलने की क्षमता थी।

उसे बस इतना करना था कि वह परमेश्वर से स्वतंत्र होकर कार्य करने के अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा करे और उसकी इच्छा के अधीन होने से इनकार करे। हम यह प्रस्ताव कर रहे हैं कि आदम के पास भी कार्य करने की वही स्वतंत्रता थी। वह धर्मी था और सृष्टिकर्ता के साथ पारदर्शी संबंध का आनंद लेता था, फिर भी उसके पास विद्रोह के कार्य द्वारा उस संबंध से मुड़ने की क्षमता थी, और उसने ऐसा किया।

मसीह के जीवन का अध्ययन करके हम यह भी जानते हैं कि आदम कोई नैतिक रूप से कमज़ोर व्यक्ति नहीं था। वह हव्वा की तरह धोखा नहीं खा गया था, 1 तीमुथियुस 2:9 से 15। उसने जानबूझकर और दुर्भावनापूर्ण तरीके से काम किया।

उन्होंने अपने स्वभाव या इरादों में किसी कमज़ोरी के आगे घुटने नहीं टेके। हम शायद कभी भी उनके इस कदम का कारण पूरी तरह से न समझ पाएं, लेकिन यह तथ्य विवाद से परे है। उन्होंने अपनी सीमा लांघी।

परमेश्वर की नैतिक बाधा को पार करना पाप है। आदम ने उस अंतिम बिंदु को पार कर लिया जहाँ से वापस लौटना संभव नहीं था। उसके विश्वासघाती कृत्य को बाद में हमारे हर पापी रवैये

और देशद्रोही इरादे और हमारे द्वारा किए गए हर ईश्वरविहीन विचार, शब्द और कार्य में दोहराया जाता है।

सभी पापों की जड़ और पाप का सार स्वयं ईश्वर से विमुख होकर विद्रोह करना है, एक विद्रोह जो वर्तमान क्षण तक जारी है। ईश्वर का धन्यवाद कि विद्रोह पराजित होगा और विद्रोह का न्याय किया जाएगा और उचित रूप से दंडित किया जाएगा। पाप के सिद्धांत के बारे में हमारा परिचय, डीए कार्सन और जॉन महोनी दोनों द्वारा निबंधों का समापन।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम बाइबल के साथ काम करेंगे, खास तौर पर उपेक्षित मामले से निपटेंगे, मैं कह सकता हूँ, मूल पाप के बारे में।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और मानवता और पाप के सिद्धांतों पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 12 है, पाप का बाइबिल विवरण जारी, पतन, मसीह और पाप।